رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿۴۸﴾ وَمِنَ

हुक्म पर ठहरे रहो[62] कि बेशक तुम हमारी निगहदाश्त में हो[63] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो जब तुम खड़े हो[64] और कुछ

الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿۴۹﴾ ع ۲

रात में उस की पाकी बोलो और तारों के पीठ देते[65]

اٰیاتها ٦٢ | ٥٣ سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ ٢٣ | رکوعاتها ٣

सूरए नज्म मक्किय्या है, इस में बासठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿۱﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿۲﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ

इस प्यारे चमक्ते तारे मुहम्मद की क़सम जब येह मे'राज से उतरे[2] तुम्हारे साहिब न बहके न बे राह चले[3] और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से

الْهَوٰى ﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿۴﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿۵﴾

नहीं करते वोह तो नहीं मगर वह्य जो उन्हें की जाती है[4] उन्हें[5] सिखाया[6] सख़्त क़ुव्वतों वाले ताक़त वर ने[7]

62 : और जो मोहलत उन्हें दी गई है इस पर दिलतंग न हो **63 :** तुम्हें वोह कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते। **64 :** नमाज़ के लिये इस से तक्बीरे ऊला के बा'द "سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ" पढ़ना मुराद है या येह मा'ना हैं कि जब सो कर उठो तो अल्लाह तआ़ला की हम्द व तस्बीह़ किया करो या येह मा'ना हैं कि हर मजलिस से उठते वक़्त हम्द व तस्बीह़ बजा लाया करो। **65 :** या'नी तारों के छुपने के बा'द, मुराद येह है कि इन अवक़ात में अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ व तह़मीद करो, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि तस्बीह़ से मुराद नमाज़ है। **1 :** सूरतुन्नज्म मक्किय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़, बासठ 62 आयतें, तीन सो साठ 360 कलिमे, एक हज़ार चार सो पांच 1405 हर्फ़ हैं, येह वोह पहली सूरत है जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ए'लान फ़रमाया और ह़रम शरीफ़ में मुश्रिकीन के रू बरू पढ़ी। **2 :** नज्म की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के बहुत से क़ौल हैं बा'ज़ ने सुरय्या मुराद लिया है अगर्चे सुरय्या कई तारे हैं लेकिन नज्म का इत्लाक़ इन पर अ़रब की आ़दत है, बा'ज़ ने नज्म से जिन्से नुजूम मुराद ली है, बा'ज़ ने वोह नबातात जो साक़ नहीं रखते ज़मीन पर फैलते हैं, बा'ज़ ने नज्म से क़ुरआन मुराद लिया है लेकिन सब से लज़ीज़ तफ़्सीर वोह है जो ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इख़्तियार फ़रमाई कि नज्म से मुराद है ज़ाते गिरामी हादिये बरह़क़ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की। (خازن) **3 :** صَاحِبُكُمْ से मुराद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं, मा'ना येह हैं कि हुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कभी त़रीक़े ह़क़ व हिदायत से उ़दूल न किया हमेशा अपने रब की तौह़ीद व इ़बादत में रहे, आप के दामने इ़स्मत पर कभी किसी अम्रे मक्रूह की गर्द न आई और बे राह न चलने से येह मुराद है कि हुज़ूर हमेशा रुश्दो हिदायत की आ'ला मन्ज़िल पर मुतमक्किन रहे, ए'तिक़ादे फ़ासिद का शाएबा भी कभी आप के ह़ाशियए बिसात़ तक न पहुंच सका। **4 :** येह जुम्लए ऊला की दलील है कि हुज़ूर का बहक्ना और बे राह चलना मुम्किन व मुतसव्वर ही नहीं क्यूं कि आप अपनी ख़्वाहिश से कोई बात फ़रमाते ही नहीं जो फ़रमाते हैं वह्ये इलाही होती है और इस में हुज़ूर के ख़ुल्क़े अ़ज़ीम और आप की आ'ला मन्ज़िलत का बयान है, नफ़्स का सब से आ'ला मर्तबा येह है कि वोह अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे। (کبیر) और इस में येह भी इशारा है कि नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अल्लाह तआ़ला के ज़ात व सिफ़ात व अफ़्आ़ल में फ़ना के उस आ'ला मक़ाम पर पहुंचे कि अपना कुछ बाक़ी न रहा तजल्लिये रब्बानी का येह इस्तीलाए ताम हुवा कि जो कुछ फ़रमाते हैं वोह वह्ये इलाही होती है। (روح البیان) **5 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **6 :** जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने उन की त़रफ़ वह्य फ़रमाया और इस ता'लीम से मुराद क़ल्बे मुबारक तक पहुंचा देना है। **7 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन इस त़रफ़ गए हैं कि सख़्त क़ुव्वतों वाले ताक़त वर से मुराद ह़ज़रते जिब्रील हैं और सिखाने से मुराद ब ता'लीमे इलाही सिखाना या'नी वह्ये इलाही का पहुंचाना है। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि "شَدِيْدُ الْقُوٰى ذُوْمِرَّةٍ" से मुराद अल्लाह तआ़ला है उस ने अपनी ज़ात को इस वस्फ़ के साथ ज़िक्र फ़रमाया, मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने बे वासित़ा ता'लीम फ़रमाई। (تفسیر روح البیان)

www.dawateislami.net

ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰی ۙ﴿۶﴾ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰی ؕ﴿۷﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰی ۙ﴿۸﴾

फिर उस जल्वे ने क़स्द फ़रमाया[8] और वोह आस्माने बरीं के सब से बुलन्द कनारे पर था[9] फिर वोह जल्वा नज़्दीक हुवा[10] फिर ख़ूब उतर आया[11]

فَكَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی ۚ﴿۹﴾ فَاَوْحٰۤی اِلٰی عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰی ؕ﴿۱۰﴾ مَا

तो उस जल्वे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासिला रहा बल्कि इस से भी कम[12] अब वह्य फ़रमाई अपने बन्दे को जो वह्य फ़रमाई[13] दिल

كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰی ﴿۱۱﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰی مَا یَرٰی ﴿۱۲﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ

ने झूट न कहा जो देखा[14] तो क्या तुम उन से उन के देखे हुए पर झगड़ते हो[15] और उन्हों ने तो वोह

8 : आम मुफ़स्सिरीन ने "فَاسْتَوٰی" का फ़ाइल भी हज़रते जिब्रील को क़रार दिया है और येह मा'ना लिये हैं कि हज़रत जिब्रीले अमीन अपनी अस्ली सूरत पर क़ाइम हुए और इस का सबब येह है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें उन की अस्ली सूरत में मुलाहज़ा फ़रमाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई थी तो हज़रते जिब्रील जानिबे मशरिक़ में हुज़ूर के सामने नुमूदार हुए और उन के वुजूद से मशरिक़ से मग़रिब तक भर गया, येह भी कहा गया है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सिवा किसी इन्सान ने हज़रते जिब्रील को उन की अस्ली सूरत में नहीं देखा। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते जिब्रील को देखना तो सहीह है और हदीस से साबित है लेकिन येह हदीस में नहीं है कि इस आयत में हज़रते जिब्रील को देखना मुराद है बल्कि ज़ाहिर तफ़्सीर में येह है कि मुराद "فَاسْتَوٰی" से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का मकाने आ़ली और मन्ज़िलते रफ़ीआ़ में इस्तिवा फ़रमाना है। (تفسیر کبیر) तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उफ़ुक़े आ'ला या'नी आस्मानों के ऊपर इस्तिवा फ़रमाया और हज़रते जिब्रील सिद्रतुल मुन्तहा पर रुक गए आगे न बढ़ सके उन्हों ने कहा कि अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ूं तो तजल्लियाते जलाल मुझे जला डालें और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आगे बढ़ गए और मुस्तवाए अ़र्श से भी गुज़र गए और हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ का तरजमा इस तरफ़ मुशीर है कि इस्तिवा की अस्नाद हज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَاَعْلٰی की तरफ़ है और येही क़ौल हसन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का है। **9 :** यहां भी आ़म मुफ़स्सिरीन इसी तरफ़ गए हैं कि येह हाल जिब्रीले अमीन का है लेकिन इमाम राज़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَه फ़रमाते हैं कि ज़ाहिर येह है कि येह हाल सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का है कि आप उफ़ुक़े आ'ला या'नी फ़ौक़े समावात थे जिस त़रह कहने वाला कहता है कि मैं ने छत पर चांद देखा पहाड़ पर चांद देखा इस के येह मा'ना नहीं होते कि चांद छत पर या पहाड़ पर था बल्कि येही मा'ना होते हैं कि देखने वाला छत या पहाड़ पर था। इसी त़रह यहां मा'ना हैं कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़ौक़े समावात पर पहुंचे तो तजल्लिये रब्बानी आप की तरफ़ मुतवज्जेह हुई। **10 :** इस के मा'ना में भी मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं **एक** क़ौल येह है कि हज़रते जिब्रील का सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़रीब होना मुराद है कि वोह अपनी सूरते अस्ली दिखा देने के बा'द हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ुर्ब में हाज़िर हुए **दूसरे** मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हज़रते हक़ के क़ुर्ब से मुशर्रफ़ हुए **तीसरे** येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपने क़ुर्ब की ने'मत से नवाज़ा और येही सहीह तर है। **11 :** इस में भी चन्द क़ौल हैं **एक** तो येह कि नज़्दीक होने से हुज़ूर का उ़रूज व वुसूल मुराद है और उतर आने से नुज़ूल व रुजूअ़ तो हासिले मा'ना येह है कि हक़ तआ़ला के क़ुर्ब में बारयाब हुए फिर विसाल की ने'मतों से फ़ैज़याब हो कर ख़ल्क़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए **दूसरा** क़ौल येह है कि हज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने लुत़्फ़ो रह़मत के साथ अपने ह़बीब से क़रीब हुवा और उस क़ुर्ब में ज़ियादती फ़रमाई, **तीसरा** क़ौल येह है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुक़र्रबे दरगाहे रबूबिय्यत हो कर सज्दए त़ाअ़त अदा किया। (روح البیان) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि क़रीब हुवा जब्बार रब्बुल इ़ज़्ज़त....اِلخ (خازن) **12 :** येह इशारा है ताकीदे क़ुर्ब की तरफ़ कि क़ुर्ब अपने कमाल को पहुंचा और बा अदब अह़िब्बा में जो नज़्दीकी मुतसव्वर हो सकती है वोह अपनी ग़ायत को पहुंची। **13 :** अक्सर उ़लमाए मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस के मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दए ख़ास हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को वह्य फ़रमाई। (جمل) हज़रत जा'फ़रे सादिक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दे को वह्य फ़रमाई जो वह्य फ़रमाई येह वह्य बे वासित़ा थी कि **अल्लाह** तआ़ला और उस के ह़बीब के दरमियान कोई वासित़ा न था और येह ख़ुदा और रसूल के दरमियान के असरार हैं जिन पर उन के सिवा किसी को इत्तिलाअ़ नहीं। बक़्ली ने कहा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस राज़ को तमाम ख़ल्क़ से मख़्फ़ी रखा और न बयान फ़रमाया कि अपने ह़बीब को क्या वह्य फ़रमाई और मुहिब व महबूब के दरमियान ऐसे राज़ होते हैं जिन को उन के सिवा कोई नहीं जानता। (روح البیان) उ़लमा ने येह भी बयान किया है कि उस शब में जो आप को वह्य फ़रमाई गई वोह कई क़िस्म के उ़लूम थे **एक** तो इ़ल्मे शराएअ़ व अह़काम जिन की सब को तब्लीग़ की जाती है **दूसरे** मआ़रिफ़े इलाहिय्यह जो ख़वास को बताए जाते हैं **तीसरे** ह़क़ाइक़ व नताइज उ़लूमे ज़ौक़िय्या जो सिर्फ़ अख़स्सुल ख़वास को तल्क़ीन किये जाते हैं और **एक** क़िस्म वोह असरार जो **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल के साथ ख़ास हैं कोई उन का तह़म्मुल नहीं कर सकता। (روح البیان) **14 :** आंख ने या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक ने उस की तस्दीक़ की जो चश्मे मुबारक ने देखा मा'ना येह हैं कि आंख से देखा दिल से पहचाना और इस

www.dawateislami.net

نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾

जल्वा दो बार देखा[16] सिद्रतुल मुन्तहा के पास[17] उस के पास जन्नतुल मावा है

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَاٰى

जब सिदरा पर छा रहा था जो छा रहा था[18] आंख न किसी त़रफ़ फिरी न ह़द से बढ़ी[19] बेशक अपने रब

مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ

की बहुत बड़ी निशानियां देखीं[20] तो क्या तुम ने देखा लात और उ़ज़्ज़ा और उस तीसरी

الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾

मनात को[21] क्या तुम को बेटा और उस को बेटी[22] जब तो येह सख़्त भोंडी (बुरी) तक़्सीम है[23]

रूयत व मा'रिफ़त में शक व तरद्दुद ने राह न पाई, अब येह बात कि क्या देखा बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल येह है कि ह़ज़रते जिब्रील को देखा लेकिन मज़्हबे सह़ीह़ येह है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने रब तबारक व तआ़ला को देखा और येह देखना किस त़रह़ था चश्मे सर से या चश्मे दिल से इस में मुफ़स्सिरीन के दोनों क़ौल पाए जाते हैं, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का क़ौल है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रब عَزَّوَجَلَّ को अपने क़ल्बे मुबारक से दोबारा देखा। (رواہ مسلم) एक जमाअ़त इस त़रफ़ गई है कि आप ने रब عَزَّوَجَلَّ को ह़क़ीक़तन चश्मे मुबारक से देखा येह क़ौल ह़ज़रते अनस बिन मालिक और ह़सन व इ़क्रिमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) का है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम को ख़ुल्लत और ह़ज़रते मूसा को कलाम और सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा को अपने दीदार से इम्तियाज़ बख़्शा (صَلَوَاتُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم)। का'ब ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दो बार कलाम फ़रमाया और ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने **अल्लाह** तआ़ला को दो मरतबा देखा। (ترمذی) लेकिन ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने दीदार का इन्कार किया और आयत को ह़ज़रते जिब्रील के दीदार पर मह़मूल किया और फ़रमाया कि जो कोई कहे कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने अपने रब को देखा उस ने झूट कहा और सनद में ''لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ'' तिलावत फ़रमाई। यहां चन्द बातें क़ाबिले लिह़ाज़ हैं : एक येह कि ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का क़ौल नफ़ी में है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का इस्बात में और मुस्बत ही मुक़द्दम होता है क्यूं कि नाफ़ी किसी चीज़ की नफ़ी इस लिये करता है कि उस ने सुना नहीं और मुस्बत इस्बात इस लिये करता है कि उस ने सुना और जाना तो इ़ल्म मुस्बत के पास है इलावा बरीं ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने येह कलाम हुज़ूर से नक़्ल नहीं किया बल्कि आयत से अपने इस्तिम्बात़ पर ए'तिमाद फ़रमाया येह ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की राय है और आयत में इदराक या'नी इह़ात़ा की नफ़ी है न रूयत की। **मस्अला :** सह़ीह़ येही है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीसे मरफ़ूअ़ से भी येही साबित है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا जो ह़िबरुल उम्मह (उम्मत के आ़लिम) हैं वोह भी इसी पर हैं, मुस्लिम की ह़दीस है : ''رَاَيْتُ رَبِّیْ بِعَيْنِیْ وَبِقَلْبِیْ'' मैं ने अपने रब को अपनी आंख और अपने दिल से देखा। ह़ज़रते ह़सन बसरी عَلَيْهِ الرَّحْمَه क़सम खाते थे कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने शबे मे'राज अपने रब को देखा। ह़ज़रते इमाम अह़मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि मैं ह़दीसे ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का क़ाइल हूं हुज़ूर ने अपने रब को देखा उस को देखा उस को देखा, इमाम साह़िब येह फ़रमाते ही रहे यहां तक कि सांस ख़त्म हो गया। **15 :** येह मुश्रिकीन को ख़ित़ाब है जो शबे मे'राज के वाक़िआ़त का इन्कार करते और इस में झगड़ते थे। **16 :** क्यूं कि (नमाज़ की) तख़्फ़ीफ़ की दरख़्वास्तों के लिये चन्द बार उ़रूज व नुज़ूल हुवा, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रब عَزَّوَجَلَّ को अपने क़ल्बे मुबारक से दो मरतबा देखा और उन्हीं से येह भी मरवी है कि हुज़ूर ने रब عَزَّوَجَلَّ को आंख से देखा। **17 :** सिद्रतुल मुन्तहा एक दरख़्त है जिस की अस्ल (जड़) छटे आस्मान में है और उस की शाख़ें सातवें आस्मान में फैली हैं और बुलन्दी में वोह सातवें आस्मान से भी गुज़र गया मलाएका और अरवाह़े शुहदा व अत्क़िया इस से आगे नहीं बढ़ सकतीं। **18 :** या'नी मलाएका और अन्वार। **19 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के कमाले क़ुव्वत का इज़्हार है कि उस मक़ाम में जहां अ़क़्लें ह़ैरत ज़दा हैं आप साबित रहे और जिस नूर का दीदार मक़्सूद था उस से बहरा अन्दोज़ हुए दाएं बाएं किसी त़रफ़ मुल्तफ़ित न हुए, न मक़्सूद की दीद से आंख फेरी न ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रह़ बेहोश हुए बल्कि उस मक़ामे अ़ज़ीम में साबित रहे। **20 :** या'नी हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने शबे मे'राज अ़जाइब मलक व मलकूत का मुलाह़ज़ा फ़रमाया और आप का इ़ल्म तमाम मा'लूमाते ग़ैबिय्या मलकूतिय्या

www.dawateislami.net

إِنْ هِيَ إِلَّآ أَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوهَآ أَنتُمْ وَءَابَآؤُكُم مَّآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بِهَا

वोह तो नहीं मगर कुछ नाम कि तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं[24] **अल्लाह** ने उन की कोई सनद

مِن سُلْطَٰنٍ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ وَمَا تَهْوَى ٱلْأَنفُسُ ۖ وَلَقَدْ

नहीं उतारी वोह तो निरे गुमान और नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे हैं[25] हालां कि बेशक

جَآءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ ٱلْهُدَىٰٓ ﴿٢٣﴾ أَمْ لِلْإِنسَٰنِ مَا تَمَنَّىٰ ﴿٢٤﴾ فَلِلَّهِ ٱلْءَاخِرَةُ

उन के पास उन के रब की त़रफ़ से हिदायत आई[26] क्या आदमी को मिल जाएगा जो कुछ वोह ख़याल बांधे[27] तो आख़िरत और दुन्या सब का

وَٱلْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾ ۞ وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ لَا تُغْنِى شَفَٰعَتُهُمْ شَيْـًٔا إِلَّا ع ٢٥ ٥

मालिक **अल्लाह** ही है[28] और कितने ही फ़िरिश्ते हैं आस्मानों में कि उन की सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती मगर

مِنۢ بَعْدِ أَن يَأْذَنَ ٱللَّهُ لِمَن يَشَآءُ وَيَرْضَىٰٓ ﴿٢٦﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ لَا

जब कि **अल्लाह** इजाज़त दे दे जिस के लिये चाहे और पसन्द फ़रमाए[29] बेशक वोह जो

يُؤْمِنُونَ بِٱلْءَاخِرَةِ لَيُسَمُّونَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ ٱلْأُنثَىٰ ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُم

आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हैं[30] मलाएका का नाम औरतों का सा रखते हैं[31] और उन्हें

بِهِۦ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ ۖ وَإِنَّ ٱلظَّنَّ لَا يُغْنِى مِنَ ٱلْحَقِّ

इस की कुछ ख़बर नहीं वोह तो निरे गुमान के पीछे हैं और बेशक गुमान यक़ीन की जगह कुछ काम

पर मुहीत़ हो गया, जैसा कि ह़दीसे इख़्तिसामे मलाएका में वारिद हुवा है और दूसरी और अह़ादीस में आया है। (روح البیان) **21 :** लात व उ़ज़्ज़ा और मनात बुतों के नाम हैं जिन्हें मुश्रिकीन पूजते थे, इस आयत में इर्शाद फ़रमाया कि क्या तुम ने इन बुतों को देखा या'नी ब नज़रे तह़क़ीक़ व इन्साफ़ अगर इस त़रह देखा हो तो तुम्हें मा'लूम हो गया होगा कि येह मह़ज़ बे क़ुदरत (बेजान) हैं और **अल्लाह** तआ़ला क़ादिरे बरह़क़ को छोड़ कर इन बे क़ुदरत बुतों को पूजना और उस का शरीक ठहराना किस क़दर ज़ुल्मे अ़ज़ीम और ख़िलाफ़े अ़क़्ल व दानिश है और मुश्रिकीने मक्का येह कहा करते थे कि येह बुत और फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं इस पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : **22 :** जो तुम्हारे नज़्दीक ऐसी बुरी चीज़ है कि जब तुम में से किसी को बेटी पैदा होने की ख़बर दी जाती है तो उस का चेहरा बिगड़ जाता है और रंग तारीक हो जाता है और लोगों से छुपता फिरता है ह़त्ता कि तुम बेटियों को ज़िन्दा दरगोर कर डालते हो फिर भी **अल्लाह** तआ़ला की बेटियां बताते हो **23 :** कि जो चीज़ बुरी समझते हो वोह ख़ुदा के लिये तज्वीज़ करते हो। **24 :** या'नी इन बुतों का नाम इलाह और मा'बूद तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने बिल्कुल बे जा और ग़लत़ त़ौर पर रख लिया है न येह ह़क़ीक़त में इलाह हैं न मा'बूद। **25 :** या'नी उन का बुतों को पूजना अ़क़्ल व इल्म व ता'लीमे इलाही के ख़िलाफ़ इत्तिबाए नफ़्स व हवा और वह्म परस्ती की बिना पर है। **26 :** या'नी किताबे इलाही और ख़ुदा के रसूल जिन्हों ने सराह़त के साथ बार बार बताया कि बुत मा'बूद नहीं हैं और **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई भी इ़बादत का मुस्तह़िक़ नहीं। **27 :** या'नी काफ़िर जो बुतों के साथ झूटी उम्मीदें रखते हैं कि वोह उन के काम आएंगे येह उम्मीदें बात़िल हैं। **28 :** जिसे जो चाहे दे, उसी की इ़बादत करना और उसी को राज़ी रखना काम आएगा। **29 :** या'नी मलाएका बा वुजूदे कि बारगाहे इलाही में क़ुर्बो मन्ज़िलत रखते हैं बा'द अज़ां सिर्फ़ उस के लिये शफ़ाअ़त करेंगे जिस के लिये **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी हो या'नी मोमिन मुवह़्ह़िद के लिये तो बुतों से शफ़ाअ़त की उम्मीद रखना निहायत बात़िल है कि न उन्हें बारगाहे ह़क़ में क़ुर्ब ह़ासिल न कुफ़्फ़ार शफ़ाअ़त के अह्ल। **30 :** या'नी कुफ़्फ़ार मुन्किरीने बअ़्स। **31 :** कि उन्हें ख़ुदा की बेटियां बताते हैं।

www.dawateislami.net

شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ

नहीं देता[32] तो तुम उस से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिरा[33] और उस ने न चाही मगर दुन्या की

الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

ज़िन्दगी[34] यहां तक उन के इल्म की पहुंच है[35] बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की राह

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي ع ١

से बहका और वोह ख़ूब जानता है जिस ने राह पाई और अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ

الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ

ज़मीन में ताकि बुराई करने वालों को उन के किये का बदला दे और नेकी करने वालों को निहायत

اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا

अच्छा सिला अ़ता फ़रमाए वोह जो बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं[36] मगर इतना कि गुनाह के पास गए

اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ

और रुक गए[37] बेशक तुम्हारे रब की मग़्फ़िरत वसीअ़ है वोह तुम्हें ख़ूब जानता है[38] तुम्हें मिट्टी

الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ

से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में ह़म्ल थे तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ[39]

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ۙ﴿٣٣﴾ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّ ع ٢

वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं[40] तो क्या तुम ने देखा जो फिर गया[41] और कुछ थोड़ा सा दिया और

32 : अम्रे वाक़ेई और ह़क़ीक़ते ह़ाल इल्म व यक़ीन से मा'लूम होती है न कि वहमो गुमान से। **33 :** या'नी क़ुरआन पर ईमान से। **34 :** आख़िरत पर ईमान न लाया कि उस का त़ालिब होता। **35 :** या'नी वोह इस क़दर कम अ़क़्ल व कम इल्म हैं कि उन्हों ने आख़िरत पर दुन्या को तरजीह़ दी है या येह मा'ना हैं कि उन के इल्म की इन्तिहा वहमो गुमान हैं जो उन्हों ने बांध रखे हैं कि (مَعَاذَاللّٰه) फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं उन की शफ़ाअ़त करेंगे और इस वहमे बात़िल पर भरोसा कर के उन्हों ने ईमान और क़ुरआन की परवाह न की। **36 :** गुनाह वोह अ़मल है जिस का करने वाला अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो और बा'ज़ अहले इल्म ने फ़रमाया कि गुनाह वोह है जिस का करने वाला सवाब से महरूम हो, बा'ज़ का क़ौल है ना जाइज़ काम करने को गुनाह कहते हैं, बहर ह़ाल गुनाह की दो क़िस्में हैं : सग़ीरा और कबीरा, कबीरा वोह जिस का अ़ज़ाब सख़्त हो और बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि सग़ीरा वोह जिस पर वईद न हो कबीरा वोह जिस पर वईद हो और फ़वाह़िश वोह जिन पर ह़द हो। **37 :** कि इतना तो कबाइर से बचने की बरकत से मुआ़फ़ हो जाता है। **38 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो नेकियां करते थे और अपने अ़मलों की ता'रीफ़ करते थे और कहते थे हमारी नमाज़ें, हमारे रोज़े, हमारे ह़ज। **39 :** या'नी तफ़ाख़ुरन अपनी नेकियों की ता'रीफ़ न करो क्यूं कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के ह़ालात का ख़ुद जानने वाला है, वोह उन की इब्तिदाए हस्ती से आख़िरे अय्याम के जुम्ला अह़वाल जानता है। **मस्अला :** इस आयत में रिया और ख़ुद नुमाई और ख़ुद सराई की मुमानअ़त फ़रमाई गई, लेकिन अगर ने'मते इलाही के ए'तिराफ़ और इत़ाअ़त व इ़बादत पर मसर्रत और उस के अदाए शुक्र के लिये नेकियों का ज़िक्र किया जाए तो जाइज़ है। **40 :** और उसी का जानना काफ़ी, वोही जज़ा देने वाला है, दूसरों पर इज़्हार और नामो नुमूद से क्या फ़ाएदा **41 :** इस्लाम से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत वलीद बिन

www.dawateislami.net

اَكْدٰى ﴿٣٤﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ

रोक रखा[42] क्या उस के पास ग़ैब का इल्म है तो वोह देख रहा है[43] क्या उसे उस की ख़बर न आई जो

صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰۤى ﴿٣٧﴾ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ

सहीफ़ों में है मूसा के[44] और इब्राहीम के जो अह़काम पूरे बजा लाया[45] कि कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरी का बोझ नहीं

اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ

उठाती[46] और येह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश[47] और येह कि उस की कोशिश अ़न्क़रीब देखी

يُرٰى ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾ وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾

जाएगी[48] फिर उस का भरपूर बदला दिया जाएगा और येह कि बेशक तुम्हारे रब ही की त़रफ़ इन्तिहा है[49]

मुग़ीरा के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का दीन में इत्तिबाअ़ किया था, मुश्रिकों ने उस को आ़र दिलाई और कहा कि तू ने बुज़ुर्गों का दीन छोड़ दिया और तू गुमराह हो गया, उस ने कहा : मैं ने अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से ऐसा किया, तो आ़र दिलाने वाले काफ़िर ने उस से कहा कि अगर तू शिर्क की त़रफ़ लौट आए और इस क़दर माल मुझ को दे तो तेरा अ़ज़ाब मैं अपने ज़िम्मे लेता हूं, इस पर वलीद इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ व मुरतद हो कर फिर शिर्क में मुब्तला हो गया और जिस शख़्स को माल देना ठहरा था उस को थोड़ा सा दिया और बाक़ी से मन्अ़ कर दिया। **42 :** बाक़ी। **शाने नुज़ूल :** येह भी कहा गया है कि येह आयत आ़स बिन वाइल सहमी के ह़क़ में नाज़िल हुई, वोह अक्सर उमूर में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ताईद व मुवाफ़क़त किया करता था और येह भी कहा गया है कि येह आयत अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुई कि उस ने कहा था **अल्लाह** तआ़ला की क़सम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमें बेहतरीन अख़्लाक़ का हुक्म फ़रमाते हैं, इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि थोड़ा सा इक़्रार किया और ह़क़्क़े लाज़िम में से क़दरे क़लील अदा किया और बाक़ी से बाज़ रहा या'नी ईमान न लाया। **43 :** कि दूसरा शख़्स इस का बारे गुनाह उठा लेगा और इस के अ़ज़ाब को अपने ज़िम्मे लेगा। **44 :** या'नी अस्फ़ारे तौरैत में **45 :** येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सिफ़त है कि उन्हें जो कुछ हुक्म दिया गया था वोह उन्हों ने पूरे त़ौर पर अदा किया, इस में बेटे का ज़ब्ह़ भी है और अपना आग में डाला जाना भी और इस के इलावा और मामूरात (अह़कामात) भी। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला उस मज़्मून का ज़िक्र फ़रमाता है जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की किताब और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के सह़ीफ़ों में मज़्कूर फ़रमाया गया था। **46 :** और कोई दूसरे के गुनाह पर नहीं पकड़ा जाता, इस में उस शख़्स के क़ौल का इब्त़ाल है जो वलीद बिन मुग़ीरा के अ़ज़ाब का ज़िम्मेदार बना था और उस के गुनाह अपने ज़िम्मे लेने को कहता था, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ज़मानए ह़ज़रते इब्राहीम से पहले लोग आदमी को दूसरे के गुनाह पर भी पकड़ लेते थे, अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया होता तो बजाए उस क़ातिल के उस के बेटे या भाई या बीबी या ग़ुलाम को क़त्ल कर देते थे, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का ज़माना आया तो आप ने इस की मुमानअ़त फ़रमाई और **अल्लाह** तआ़ला का येह हुक्म पहुंचाया कि कोई किसी के बारे गुनाह में माख़ूज़ नहीं। **47 :** या'नी अ़मल। मुराद येह है कि आदमी अपनी ही नेकियों से फ़ाएदा पाता है, येह मज़्मून भी सुहुफ़े इब्राहीम व मूसा का है عَلَيْهِمَا السَّلَام और कहा गया है कि इन ही उम्मतों के लिये ख़ास था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह हुक्म हमारी शरीअ़त में आयत "اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ" से मन्सूख़ हो गया। ह़दीस शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मेरी मां की वफ़ात हो गई अगर मैं उस की त़रफ़ से सदक़ा दूं क्या नाफ़ेअ़ होगा ? फ़रमाया : हां। **मसाइल :** और ब कसरत अह़ादीस से साबित है कि मय्यित को सदक़ात व त़ाआ़त से जो सवाब पहुंचाया जाता है पहुंचता है और इस पर उ़लमाए उम्मत का इज्माअ़ है और इसी लिये मुसल्मानों में मा'मूल है कि वोह अपने अम्वात (मुर्दों) को फ़ातिह़ा, सिवुम, चेहलम, बरसी, उ़र्स वग़ैरा में त़ाआ़त व सदक़ात से सवाब पहुंचाते रहते हैं, येह अ़मल अह़ादीस के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है, इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि यहां इन्सान से काफ़िर मुराद है और मा'ना येह हैं कि काफ़िर को कोई भलाई न मिलेगी बजुज़ उस के जो उस ने की हो कि दुन्या ही में वुस्अ़ते रिज़्क़ या तन्दुरुस्ती वग़ैरा से उस का बदला दे दिया जाएगा ताकि आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा बाक़ी न रहे और एक मा'ना आयत के मुफ़स्सिरीन ने येह भी बयान किये हैं कि आदमी ब मुक़्तज़ाए अ़द्ल वोही पाएगा जो उस ने किया हो और **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्ल से जो चाहे अ़त़ा फ़रमाए और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि मोमिन के लिये दूसरा मोमिन जो नेकी करता है वोह नेकी ख़ुद उसी मोमिन की शुमार की जाती है जिस के लिये की गई क्यूं कि उस का करने वाला मिस्ल नाइब व वकील के उस का क़ाइम मक़ाम होता है। **48 :** आख़िरत में **49 :** आख़िरत में उसी की त़रफ़ रुजूअ़ है वोही आ'माल की जज़ा देगा।

www.dawateislami.net

وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿٤٣﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ

और येह कि वोह ही है जिस ने हंसाया और रुलाया[50] और येह कि वोही है जिस ने मारा और जिलाया[51] और येह कि उसी ने

الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٤٥﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ

दो जोड़े बनाए नर और मादा नुत्फ़े से जब डाला जाए[52] और येह कि उसी के

النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿٤٧﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ﴿٤٨﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ

ज़िम्मे है पिछला उठाना[53] और येह कि उसी ने ग़ना दी और क़नाअ़त दी और येह कि वोही सितारा शि'रा

الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾ وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا الْاُوْلٰى ﴿٥٠﴾ وَثَمُوْدَا فَمَاۤ اَبْقٰى ﴿٥١﴾ وَ

का रब है[54] और येह कि उसी ने पहली आ़द को हलाक फ़रमाया[55] और समूद को[56] तो कोई बाक़ी न छोड़ा और

قَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ

उन से पहले नूह़ की क़ौम को[57] बेशक वोह उन से भी ज़ालिम और सरकश थे[58] और उस ने उलटने वाली बस्ती

اَهْوٰى ﴿٥٣﴾ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾ هٰذَا

को नीचे गिराया[59] तो उस पर छाया जो कुछ छाया[60] तो ऐ सुनने वाले अपने रब की कौन सी ने'मतों में शक करेगा येह[61]

نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ

एक डर सुनाने वाले हैं अगले डराने वालों की त़रह़[62] पास आई पास आने वाली[63] अल्लाह के सिवा उस का कोई

اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا

खोलने वाला नहीं[64] तो क्या इस बात से तुम तअ़ज्जुब करते हो[65] और हंसते हो और

50 : जिसे चाहा ख़ुश किया जिसे चाहा ग़मगीन किया। **51 :** या'नी दुन्या में मौत दी और आख़िरत में ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाई या येह मा'ना कि बाप दादा को मौत दी और उन की औलाद को ज़िन्दगी बख़्शी या येह मुराद कि काफ़िरों को मौते कुफ़्र से हलाक किया और ईमानदारों को ईमानी ज़िन्दगी बख़्शी। **52 :** रेह़्म में **53 :** या'नी मौत के बा'द ज़िन्दा फ़रमाना **54 :** जो कि शिद्दते गर्मा में "**जौज़ा**" के बा'द त़ालेअ़ (तुलूअ़) होता है, अहले जाहिलिय्यत उस की इ़बादत करते थे, इस आयत में बताया गया कि सब का रब **अल्लाह** ही है, इस सितारे का रब भी **अल्लाह** है, लिहाज़ा उसी की इ़बादत करो। **55 :** बादे सरसर (तेज़ हवा) से। आ़द दो हैं : एक तो क़ौमे हूद इन को पहली आ़द कहते हैं और इन के बा'द वालों को दूसरी आ़द कि वोह उन्हीं के आ'क़ाब (बा'द की नस्ल) थे। **56 :** जो सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम थी। **57 :** ग़र्क़ कर के हलाक किया। **58 :** कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام उन में हज़ार बरस के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा रहे मगर उन्हों ने दा'वत क़बूल न की और उन की सरकशी कम न हुई। **59 :** मुराद इस से क़ौमे लूत़ की बस्तियां हैं जिन्हें ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ब हुक्मे इलाही उठा कर औंधा डाल दिया और ज़ेरो ज़बर कर दिया। **60 :** या'नी निशान किये हुए पथ्थर बरसाए। **61 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। **62 :** जो अपनी क़ौमों की त़रफ़ रसूल बना कर भेजे गए थे। **63 :** या'नी क़ियामत **64 :** या'नी वोही उस को ज़ाहिर फ़रमाएगा या येह मा'ना हैं कि उस के अह़वाल और शदाइद को **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई नहीं दफ़्अ़ कर सकता और **अल्लाह** तआ़ला दफ़्अ़ न फ़रमाएगा। **65 :** या'नी क़ुरआने मजीद से मुन्किर होते हो।

www.dawateislami.net

تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿٦٢﴾ السجدة ٧ ع ٣

रोते नहीं[66] और तुम खेल में पड़े हो तो अल्लाह के लिये सज्दा और उस की बन्दगी करो[67]

اٰياتها ٥٥ | ٥٤ سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ ٣٧ | ركوعاتها ٣

सूरए क़मर मक्किय्या है, इस में पचपन आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَ

पास आई क़ियामत और[2] शक़ हो गया चांद[3] और अगर देखें[4] कोई निशानी तो मुंह फेरते[5] और

يَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ

कहते हैं येह तो जादू है चला आता और उन्हों ने झुटलाया[6] और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए[7] और हर काम क़रार

مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌ

पा चुका है[8] और बेशक उन के पास वोह ख़बरें आईं[9] जिन में काफ़ी रोक थी[10] इन्तिहा को पहुंची हुई

بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَیْءٍ وقف لازم

हिक्मत फिर क्या काम दें डर सुनाने वाले तो तुम उन से मुंह फेर लो[11] जिस दिन बुलाने वाला[12] एक सख़्त बे पहचानी बात की त़रफ़

66 : उस के वा'दा वईद सुन कर। 67 : कि उस के सिवाए कोई इबादत का मुस्तह़िक़ नहीं। 1 : सूरए क़मर मक्किय्या है सिवाए आयत "سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ" के, इस में तीन 3 रुकूअ़, पचपन 55 आयतें और तीन सो बियालीस 342 कलिमे और एक हज़ार चार सो तेईस 1423 ह़र्फ़ हैं। 2 : उस के नज़्दीक होने की निशानी ज़ाहिर हुई कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़े से 3 : दो पारा हो कर। शक़्क़ुल क़मर जिस का इस आयत में बयान है नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात बाहिरा में से है, अहले मक्का ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से एक मो'जिज़े की दरख़्वास्त की थी तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने चांद शक़ कर के दिखाया, चांद के दो हिस्से हो गए और एक हिस्सा दूसरे से जुदा हो गया और फ़रमाया कि गवाह रहो, क़ुरैश ने कहा मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने जादू से हमारी नज़र बन्दी कर दी है, इस पर उन्हीं की जमाअ़त के लोगों ने कहा कि अगर येह नज़र बन्दी है तो बाहर कहीं भी किसी को चांद के दो हिस्से नज़र न आए होंगे अब जो क़ाफ़िले आने वाले हैं उन की जुस्तजू रखो और मुसाफ़िरों से दरयाफ़्त करो अगर दूसरे मक़ामात से भी चांद शक़ होना देखा गया है तो बेशक मो'जिज़ा है, चुनान्चे सफ़र से आने वालों से दरयाफ़्त किया उन्हों ने बयान किया कि हम ने देखा कि उस रोज़ चांद के दो हिस्से हो गए थे, मुश्रिकीन को इन्कार की गुन्जाइश न रही और वोह जाहिलाना त़ौर पर जादू ही जादू कहते रहे। सिह़ाह़ की अह़ादीसे कसीरा में इस मो'जिज़ए अ़ज़ीमा का बयान है और ख़बर इस दरजए शोहरत को पहुंच गई है कि इस का इन्कार करना अ़क़्ल व इन्साफ़ से दुश्मनी और बे दीनी है। 4 : अहले मक्का नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिद्क़ व नुबुव्वत पर दलालत करने वाली 5 : उस की तस्दीक़ और नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने से 6 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को और उन मो'जिज़ात को जो अपनी आंखों से देखे 7 : उन अबात़ील (बात़िल ख़्वाहिशों) के जो शैत़ान ने उन के दिल नशीन की थीं कि अगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात की तस्दीक़ की तो उन की सरदारी तमाम आ़लम में मुसल्लम हो जाएगी और क़ुरैश की कुछ भी इ़ज़्ज़तो क़द्र बाक़ी न रहेगी। 8 : वोह अपने वक़्त पर होने ही वाला है कोई उस को रोकने वाला नहीं, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का दीन ग़ालिब हो कर रहेगा। 9 : पिछली उम्मतों की जो अपने रसूलों की तक्ज़ीब करने के सबब हलाक किये गए। 10 : कुफ़्रो तक्ज़ीब से और इन्तिहा दरजे की नसीह़त। 11 : क्यूं कि वोह नसीह़त व इन्ज़ार से पन्द पज़ीर होने वाले नहीं (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْقِتَالِ ثُمَّ نُسِخَ) 12 : या'नी ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام सख़रए बैतुल

www.dawateislami.net